CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

महिप-पत्रिका

(मणिपुर हिन्दी परिषद, इम्फाल की त्रै-मासिक पत्रिका)

वर्ष : ८ अक : ७० मार्च : १९९४

वर्ष : ८ अंक ७१ जून : १९९४

प्रधान सम्पादक —
डॉ० सा० तोम्बा सिंह

सह-सम्पादक —
सिद्धनाथ प्रसाद
डॉ० ऋषभदेव शर्मा
स० लनचेन्बा मीतै

सम्पादक —
देवराज

शुल्क —
वार्षिक : बीस रूपए
यह अंक : पाँच रूपए

पत्र-व्यवहार —
मणिपुर हिन्दी परिषद
एसेम्बली रोड
इम्फाल-७९५००१

दूरभाष : २२०२५५

विषय-सूची

सम्पादकीय — १

नर-नारी की सत्ता
एक समान है — ३

अरामबम बीरेन सिंह — ८

पुन्सिगी मरूद्यान — ९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सम्पादकीय

सन् १९९३ का साहित्य अकादमी का पुरस्कार मणिपुरी भाषा के कथाकार श्री अराम्बम बीरेन सिंह को प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें, उनकी औपन्यासिक कृति 'पुन्सिगी मरुद्यान' (जीवन का मरुद्यान) के लिए प्राप्त हुआ।

मणिपुरी भाषा में उपन्यास जिस यथार्थवादी संवेदना को अभिव्यक्त कर रहे हैं और जिस प्रकार से उनमें जन-असन्तोष व समस्याओं की अभिव्यक्ति हो रही है - वह सब इस बार के पुरस्कृत उपन्यास का विषय नहीं है। न ही वह किसी अन्य ज्वलन्त समस्या को उठाता है। उसमें आदर्शवादी चिन्तन की प्रधानता है। वह जिन मूल्यों की अभिव्यक्ति और व्याख्या करता है, वे सब मानवीय आकांक्षाओं, प्रेम और नैतिकता ओढ़ी हुई करूणा-भावना को प्रस्तुत करते हैं। इतिहास की दृष्टि से लेखन की यह दृष्टि उस काल की याद दिलाती है, जब मणिपुरी साहित्य पर शरत, बंकिम, रवीन्द्र के साथ-साथ असमीया भाषा के कथाकारों का प्रभाव पड़ रहा था और यहाँ के लेखक पुनर्जागरण-कालीन संवेदना के सम्पर्क में भावुक और आदर्शवादी लेखन में जुटे हुए थे।

आज का मणिपुरी उपन्यास बहुत आगे बढ़ आया है, उसके पास पीछे मुड़ कर देखने का अवकाश नहीं है। फिर भी बीच-बीच में कुछ ऐसी कृतियाँ आ जाती हैं, जो पिछले युगों की याद ताजा कर जाती हैं: 'पुन्सिगी मरुद्यान' ऐसी ही कृति है।

यह इस वर्ष के पुरस्कृत उपन्यास का एक पक्ष है। हमें उसके दूसरे पक्ष पर भी ध्यान देना होगा। इस उपन्यस की रचना करते समय लेखक के सामने कुछ उद्देश्य रहे हों। यदि ऐसा न होता तो उसने पूरी तरह यथार्थवादी धारा की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उपस्थिति में आदर्शवाद का राग न गाया होता। उसका एक प्रमुख उद्देश्य रहा होगा निरन्तर असन्तोष की आग में जलते हुए समाज को यह प्रेरणा देना कि वह प्रेम और त्याग तथा सच्चाई के मार्ग का अनुसरण करे ताकि उसे शान्ति मिल सके। भले ही इस मार्ग का यह कह कर विरोध किया जाए कि यह तो समस्याओं का सामना करने के साहस से हीन होने के कारण सही मार्ग नहीं है, किन्तु इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्रेम और त्याग का सन्देश हमारी पुरानी परम्परा है और यह भी एक मार्ग है, जिस पर चल कर बहुत सी समस्याओं का हल ढूँढा जा सकता है। आज जब चारों ओर आग सी लगी हुई है, तब सारी मानवता के लिए प्रेम का शीतल जल आवश्यक है। इस दृष्टि से 'पुन्सिगी मरुद्यान' पठनीय कृति है।

अराम्बम वीरेन सिंह चुपचाप रहते हुए साहित्य-साधना करने वाले लेखक हैं। वे ऐसे रचनाकार नहीं है, जिनके पाठकों की संख्या से अधिक उनके मित्रों की संख्या होती है। वीरेन सिंह के मित्रों की संख्या कम है, किन्तु उनके पाठक बड़ी मात्रा में हैं। इसके चलते उनके ग्रन्थों की समीक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता—शायद वे स्वयं भी इस ओर से उदासीन हैं। इतना होने पर भी वे लगातार मणिपुरी कथा-साहित्य की श्रृंखला बढ़ाते चले जा रहे हैं। यह कम प्रशंसनीय नहीं है कि वीरेन सिंह ने मूल रूप से अंगरेजी कहानियों से अपनी साहित्यक-यात्रा प्रारम्भ की और वे आज मणिपुरी कला-साहित्य के स्तम्भ बन चुके हैं।

साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित-पुरस्कृत किए जाने पर महिप परिवार उन्हें बधाई देता है। उनसे पाठकों की भेंट कराने के लिए हम इस अंक में उनका परिचय और साक्षात्कार विशेष रूप से प्रकाशित कर रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

साक्षात्कार

नर-नारी की सत्ता एक समान है ।

—अराम्बम बीरेन सिंह

प्र० — आपको मणिपुरी भाषा में लिखने की प्रेरणा कब और किनसे प्राप्त हुई ।

उत्तर मैंने बचपन में कमल का 'माधवी' उपन्यास पढ़ा । उसके बाद शरतचन्द्र एवं कालिदास की मणिपुरी में अनूदित रचनाएँ पढ़ीं । उन्हीं से मैंने मणिपुरी भाषा में लिखने की प्रेरणा पाई । मैंने पन्द्रह वर्ष की अवस्था में - सन् १९६२ से, ही लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया था । उस समय लिखी कहानियाँ स्कूल की पत्रिका में प्रकाशित हुई थीं ।

प्र०— अब तक आपकी कितनी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं । उनमें से आपकी प्रिय रचना कौन सी है ।

उत्तर—मेरी अब तक छः पुस्तकें छप चुकी हैं । आपने जो सवाल किया कि मुझे अपनी कौन सा रचना प्रिय है, तो मुझे ऐसा लगता है कि आप जानना चाहते हैं कि मुझे अपने बच्चों में से कौन सबसे प्रिय है ? तो इसका उत्तर तो मुझे कठिन प्रतीत होता है । व्यक्तिगत स्तर पर मेरे लिए इनमें कोई अन्तर नहीं है फिर आप सबने मेरे उपन्यास 'पुन्सिगी मरुद्यान' को जो श्रेष्ठ माना है, तो मैं उसमें आप लोगों से असहमत भी नहीं हूँ ।

प्र०— पाठक आपके इस उपन्यास को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रचना कहते हैं, आपकी इस विषय में क्या राय है ।

उत्तर—मैं जो कुछ भी लिख रहा हूँ, वह यथार्थपरक शैली में है । उसका मूल उद्देश्य आदर्शोन्मुख होता हो सकता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

है। मुझे लगता है कि आप मेरी इस कृति को यथार्थपरक आदर्शवाद की भेंट चढ़ाना चाहते हैं— मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

प्र०— आप अपने नायक महेन्द्र के माध्यम से समाज के समक्ष कौन सा आदर्श उपस्थित करना चाहते हैं।

उत्तर—महेन्द्र मूलतः वर्तमान समाज में भ्रष्ट आचरण करने वालों के बिरुद्ध कार्य करने वाला व्यक्ति है। उसके चरित्र के आधार पर मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ, वह यह कि मनुष्य सच, प्यार और त्याग के मार्ग पर चल कर ही सुख, शान्ति और चैन पा सकता है।

प्र०— आपके इस उपन्यास पर कमल की माधवी का प्रभाव परिलक्षित होता है— आपका क्या विचार है।

उत्तर—मैं सोच भी नहीं सकता कि 'पुन्सिगी मरुद्यान' पर माधवी का प्रभाव है। दोनों कृतियों की शैली में अंतर है।

प्र०— आपकी इस कृति में पुरूष, स्त्रियों के साथ विश्वासघात करते हैं, स्त्रियाँ ऐसा नहीं करतीं.....।

उत्तर—यह सब स्त्री और पुरूष को अलग-अलग न देख कर एक समान व्यक्ति सत्ता के रूप में मान कर उनसे असत्य भरे जीवन और अभावग्रस्त चरित्र के विश्लेषण का परिणाम है। फिर भी यह तो मानना ही होगा कि समाज में नारियों पर अत्याचार करने वाले शक्तिशाली पुरूषों की संख्या अधिक है।

प्र०— आपके इस उपन्यास के पात्र समय आने पर अपने मन के वास्तविक विचार और निश्चयात्मक दृष्टिकोण प्रकट करने में निर्बल प्रतीत होते हैं— आप क्या कहेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उत्तर—प्रत्येक मनुष्य के मन में ऐसे अनेक विचार होते हैं, जिन्हें प्रकट करना संभव नहीं होता—वे समय के अनुसार भी हो सकते हैं। मेरी रचनाओं के पात्रों को जो विचार प्रकट करने चाहिए, वही वे प्रकट करते हैं। यह उनकी निर्बलता नहीं है। आपके प्रश्न में पूछा गया 'समय आने पर' का भाव स्पष्ट नहीं है, अतः उत्तर देना कठिन है।

प्र०—आलोचकों की दृष्टि में आपका उपन्यास 'पुन्सिंगी मरूद्यान' कथानक की दृष्टि से असफल है—आपका क्या विचार है।

उत्तर—कथानक की दृष्टि से असफल कहने का आपका भाव ही क्लियर नहीं है। मेरी दृष्टि में तो यह अपूर्ण कथानक नहीं है। अन्त में मैंने तार्किक दृष्टि से निष्कर्ष भी दिया है। कथानक को इससे लम्बा खींचना शायद कला की दृष्टि से उचित नहीं होता। अधिक लम्बा करने से उसका प्रभाव नष्ट हो सकता था।

प्र०—आपके इस उपन्यास के अनुसार प्रेम का विवाह तक पहुँचना कठिन है और विवाह यदि है तो स्त्री-पुरुष के बीच प्रेम नहीं होता—आपका क्या कहना है।

उत्तर—इसमें पुरुष की गल्ती भी हो सकती है और स्त्री की भी।

प्र०—इस रचना में आदर्शवादी पत्र अंजलि, महेन्द्र से कहती है कि 'स्त्री के बिना पुरुष का जीवन अधूरा है'। यदि यही महेन्द्र द्वारा अंजलि से कहा जाता तो उसका क्या उत्तर होता।

उत्तर—अंजलि और महेन्द्र में अन्तर है। अंजलि विवाहिता है। पतन के मार्ग से उठ कर आई हुई और त्याग के रास्ते पर चलने वाली स्त्री है। महेन्द्र युवा है। उसकी जवानी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

और फिर भी उसके एकांकी जीवन को देखकर अंजलि ने अपना असन्तोष प्रकट किया। वह उसे अकेले जीवन से हट कर विवाह करने को कहती है। महेन्द्र यदि यही बात कहता तो उसका उत्तर होता कि 'वह तो त्यागी है। गृहस्थी के मार्ग पर चली हुई और बाद में उसे छोड़ देने वाली नारी है। अब उसके लिए यह सब कुछ आवश्यक नहीं है। वह दृढ़ निश्चय के साथ एकांकी जीवन का सामना करने के मार्ग पर निकल आई स्त्री है।

प्र० —यदि आप महेन्द्र और प्रिया के स्थान पर महेन्द्र और अंजलि के विवाह का प्रयास करते तो क्या यह कुछ अनुचित होता।

उत्तर—ऐसा करने से उपन्यास-कला खण्डित हो जाती और रचना आवश्यक आनन्द प्रदान नहीं करती।

प्र० —आप हमेशा चुपचाप रहते हैं, किसी से मिलते भी नहीं—ऐसा करने के पीछे आपका क्या विचार है।

उत्तर—मेरे लिए रचना करना बहुत बड़ी साधना है। लेखन कार्य करते हुए बाहर न निकलने की इच्छा और लोगों के सम्पर्क के प्रति अनिच्छा के कारण मैं ऐसा करता हूँ। फिर भी मैं बिना किसी से मिले या छिप कर तो नहीं रहता। साहित्यिक वर्ग में मेरे कुछ प्रसिद्ध मित्र हैं। उनके साथ साहित्यिक विषयों पर बातें करने में मुझे आनन्द और सुकून मिलता है। साहित्यिक संगोष्ठियों में भी मैं बार-बार भाग लेता हूँ।

प्र० —आपका उपन्यास पढ़ कर पाठकों के सामने सवाल खड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by JKS-MoE-2025-Grant

हो जाता है कि आज के समाज में किस प्रकार के व्यक्ति को सटीक माना जाए।

उत्तर—मैं ऐसा व्यक्ति चाहता हूँ जो अच्छे कार्य करे, मेहनती हो और अच्छे विचार रखे। ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढ़ने पर समाज सुखी होगा।

प्र०— अच्छा, यह बताइए कि पुरस्कार की घोषणा से आपको कैसा लगा।

उत्तर—साहित्य की डगर पर बढ़ते ही आप लोगों की प्रशंसा पाने का एक अवसर मिला—यह सोच कर मुसे बहुत सन्तोष हुआ।

साक्षात्कार : थौनाओजम सुरेन्द्र द्वारा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

१९९३ का साहित्य अकादमी पुरस्कार

अराम्बम बीरेन सिंह

जन्म : सन् १९४६ ई०, काङ्बम लैकाई, इम्फाल।

शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा कैशामथोङ् एम० ई० स्कूल में। उसके बाद जॉन्स्टन हायर सेकेन्ड्री स्कूल में भर्ती। १९६४ में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। १९६८ में ध्रनमजरी कॉलेज से स्नातक। शान्ति निकेतन में प्रवेश, किन्तु अस्वस्थता के कारण उच्च अध्ययन जारी नहीं रख सके। १९७२ में गुवाहाटी विश्व विद्यालय से अंगरेजी साहित्य में एम० ए० किया।

रचनाएँ : इनदि डैफ्थस ऑफ अवर हर्ट (अंगरेजी में लिखी कहानियों का संग्रह - १९७६), पद्मिनी (उपन्यास—१९८१), इमुङ् अमगी वारि (उपन्यास – १९८४), अमृत (उपन्यास – १९८९), इथिल (उपन्यास – १९९१), पुन्सिगी मरुद्यान (उपन्यास – १९९२)
इसके अलावा मतमगी खोङ्थाङ् और वाखल आदि पत्रिकाओं में लेखन।

पुरस्कार : सन् १९९३ का साहित्य अकादमी पुरस्कार 'पुन्सिगी मरुद्यान' के लिए।

सम्प्रति : मणिपुरी विभाग, डी० एम० कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड कॉमर्स, इम्फाल-७९५००१। (मणिपुर) में कार्यरत।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पुन्सिगी मरूद्यान

(जिन्दगी का मरूस्थल)

उपन्यासकार : अ० बीरेन सिंह

महेन्द्र की सौतेली माँ उसके खिलाफ पति के कान भरती है जिससे बाप बेटे में झगड़ा होता है। और वह घर छोड़ देता है। वह बलदेव की दुकान पर अकाउन्टेन्ट का काम करता था लेकिन बलदेव तथा उनके परिवार के लोगों का बर्ताव उसे अच्छा नहीं लगता था, इसलिए बिना कुछ कहे वह दुकान छोड़ देता है। फिर भी उस रात वह निमाइ के यहाँ चला जाता है जो उसके साथ दुकान पर सेल्समैन का काम करता था। निमाइ दुकान की ऊपरी मजिल पर रहता था। मेहन्द्र को देखकर उसे आश्चर्य होता है। बाद में पता चलता है कि वह घर छोड़ कर आया है। निमाइ उसे बलदेव की दुकान पर फिर से काम करने को कहता है। न चाहते हुए भी अपनी स्थिति का अनुभव करते हुए वह मान जाता है। निमाइ महेन्द्र के लिए बलदेव से बात करता है, लेकिन बलदेव इन्कार कर देता है। जब महेन्द्र जाने को हुआ तो बलदेव की दूसरी पत्नी कुमुदिनी जो दुकान पर आई हुई थी, के कहने पर महेन्द्र को फिर काम पर रखने के लिए तैयार हो जाता है। वह दुकान के काम पर फिर लग जाता है। दिन को दुकान, से फुरसत नहीं मिलती। शाम को थोड़ी देर के लिए टहलता फिर रात को निमाइ के साथ बातें किया करता था। इस तरह कुछ दिन गुजर गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एक दिन बलदेव का इकलौता बेटा विनोद और उसकी नई दुल्हन अंजलि बलदेव की अनुपस्थिति में दुकान पर आते हैं। अंजलि खूबसूरत थी। उसकी खूबसूरती किसी को भी आकर्षित करने के लिए काफी थी। बड़े घर की बहू कहलाने योग्य गुण थे उसमें। दोनों दुकान की व्यवस्था में हाथ बँटाते हैं और उस दिन से विनोद पूर्ण रूप से दुकान की देखरेख करने लगता है।

दिन भर के शीरगुल व कृत्रिम जिन्दगी से महेन्द्र उकता जाता है। वह एकान्त में अक्सर सोचता रहता है कि इन्सान इतना क्यों बदल जाता है। लोगों में अमृत रुपी अनमोल प्रेम भाव खोता जा रहा है। लोग अपने बाल बच्चों से असीम प्यार करते हैं, लेकिन परायों को इन्सान की तरह नहीं देख पाते। शायद यह इस युग की नियति है। लोग एक ऐसे बंधन में बंधे हुए हैं जो वास्तव में सुख नहीं लेकिन वे उसमें सुख का ढांग रचाते हैं। इस प्रकार के विचार महेन्द्र के मन में उठते रहते थे। अक्सर वह निमाइ के साथ समय बिताया करता था लेकिन कुछ दिनों से निमाइ के व्यवहार में कुछ बदलाव सा दिखने लगा। पूछने पर वह बलदेव के परिवार के सम्बन्ध में असंतोष प्रकट करके चुप हो जाता।

एक रात निमाइ एक औरत को लिए महेन्द्र के पास आता है और उसे बताता है कि वह उसकी दूसरी बीवी है। वह उसके साथ घर बसाने जा रहा है। वैसे निमाइ शादीशुदा था लेकिन पहली पत्नी से तलाक ले चुका था। वह महेन्द्र से तीन सौ रुपये लेकर उस औरत के मायके खोंहामपात चला जाता है। वह दुकान छोड़ देता है। एक दिन बाजार में उससे महेन्द्र की मुलाकात होती है। वह उसे अपने घर आने को कहता है। उस शाम को जब महेन्द्र अपने कमरे पर लौट रहा था

CC-0. Jangamwadi Math Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तो उसने अपने दोस्त तोंबिन का इन्तजार करते पाया। पता चला कि उसका एक दोस्त एक लड़की को ला रहा है और एक रात उसके यहाँ काटेगा। लेकिन कुछ लोगों के खबर देने से पुलिस को पता चल जाता है। पुलिस उन लोगों के साथ महेन्द्र को भी पकड़कर थाने ले जाती है। रात भर उन्हें लॉक-अप में काटना पड़ा। जब छूटकर आया तो बलदेव उसे दुकान पर रखने से इन्कार कर देता है। लाचार होकर महेन्द्र अपना सामान समेटे खोंहाम्पात के लिए रवाना हो जाता है। निमाइ की पत्नी उसके लिए मकान ढूँढ़ देती है। वहाँ बच्चों का ट्यूशन लेकर कुछ दिन गुजारा करता है। एक दिन महेन्द्र इम्फाल आता है। बाजार में उसे पता चलता है कि उसके पिता का देहांत हुए तीन महीने हो चुके हैं और उसकी सौतेली माँ बीमार होने की वजह से अपने बच्चों सहित मायके गई हुई हैं। महेन्द्र घर वापस लौट आता है। तीन महीने बाद उसकी सौतेली माँ भी अपने दोनों बच्चों के साथ वापस आ जाती है। अब वह बदल चुकी थी। एक दिन बाजार में हरि से मुलाकात होती है जो बलदेव की दुकान पर उसके साथ काम करता था। उसने बताया कि बलदेव के परिवार वाले उसे फिर दुकान पर रखना चाहते हैं क्योंकि उन्हें पता चला है कि महेन्द्र का कोई दोष नहीं था। लेकिन महेन्द्र उतना बेशर्म नहीं था और फिर गंदगी, शोर तथा लोगों को तुच्छ समझनेवालों के बीच काम करना नहीं चाहता था। उसका अधिकांश समय बेचैनी की हालत में कट रहा था।

एक शाम को निमाइ महेन्द्र के यहाँ आता है। वह इम्फाल में किसी शादी के सिलसिले में आया था। वह सोच रहा था कि अपनी पत्नी थाबल्लै की पहले पति से उत्पन्न लड़की प्रिया को अपनाने को महेन्द्र से कहे। लेकिन कह नहीं पाता और अगले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दिन चला जाता है। उसी दिन निमाइ बन्सी से मछली पकड़ने नदी पर जाता है और पानी के तेज बहाव में डूब कर मर जाता है। एक दिन बाजार में महेन्द्र की मुलाकात थाबल्लै से होती है। उसे निमाइ के मरने की खबर मिलती है। उधर प्रिया महेन्द्र को मन ही मन प्रेम करने लगती है। एक दिन महेन्द्र थाबल्लै के घर आता है। वहीं प्रिया से उनकी मुलाकात होती है। महेन्द्र उसे एक मासूम बच्ची समझकर उससे स्नेहभाव रखता है। कुछ साधारण बातें करके फिर आने को कहकर चला जाता है।

एक दिन बाजार में महेन्द्र का दोस्त प्रवीण मिलता है। वह उसे अपने साथ काम करने को कहता है। प्रवीण उसे अपने छोटे भाई मणिबाबु के साथ कलकत्ता भेज देता है। वहाँ पहुँचकर महेन्द्र को पता चलता है कि उसे गैर कानूनी माल बेचने के लिए भेजा गया है जिसके वह सख्त खिलाफ था। वापस आकर उसकी प्रवीण के साथ कहासुनी होती है, बात बढ़ते-बढ़ते हाथापाई की नौबत तक पहुँचती है जिसमें प्रवीण घायल हो जाता है। महेन्द्र उसे मरा समझकर खोंहाम्पात में छुपने के लिए चला जाता है। कुछ दिन वह निथेम के घर रहता है। उसके पास ज्यादा पैसा नहीं था। इसलिए वह निथेम के घर ज्यादा दिन रुकना नहीं चाहता था। वह थाबल्लै के पास आता है, लेकिन उस हालत में उसे वह आसरा देना ठीक नहीं समझती। प्रिया को दुःख होता है। लाचार होकर वह इम्फाल आकर अपने आपको पुलिस के हवाले करता है। कुछ दिन बाद जमानत पर छोड़ दिया जाता है।

बलदेव की दुकान अब पूर्णरूप से अंजली की देख रेख में चल रही थी, क्योंकि बलदेव को लकवा हो गया था और उसका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इकलौता बेटा विनोद नशे में डूब चुका था। दुकान पर महेन्द्र जैसा कोइ विश्वसनीय व्यक्ति नहीं था। एक दिन अंजलि महेन्द्र के घर दुकान पर फिर काम करने का प्रस्ताव लेकर आती है। महेन्द्र इन्कार कर देता है। विनोद के शराबके नशे में धुत रहने के कारण उसके प्रति अंजलि का मन ऊब जाता है। वह इन्द्रमणि नामक एक नौजवान डॉक्टर (जो पहले उसके पति को देखा करता था) की ओर आकर्षित हो जाती है। बीमारी के बहाने दोनों एक दूसरे के करीब रहा करते हैं।

अंजलि का इन्द्रमणि के साथ दुकान पर अक्सर मुलाकात करना दुकान पर काम करने वालों को खटकने लगा। सास ससुर को इसकी खबर लगी। उस समय उसका पति विनोद ड्रग बेचने तथा खाने के सिलसिले में जेल में था। दुकान की स्थिति गिरने लगी। इन्द्रमणि की शादी हो जाती है। अंजलि दिन रात शराब पीने लगी। एक दिन उसकी सास कुमुदिनी दुकान पर आकर उसे बुरा भला कहने लगी। उसी दिन अंजलि सास से लड़कर मायके चली जाती है। अंजली का मायका भी धनी था। माँ बाप गुजर चुके थे। दो भाई थे लेकिन अलग रहते थे। बाजार में तीन दुकाने थीं। एक अंजलि के नाम पर और दो दोनों भाइयों के नाम पर। घर में अकेली लड़की होने के कारण वह बचपन से ही स्वंतत्र स्वभाव की थी। मायके आकर सुख दुःख के बारे में कुछ सोचती नहीं। बैचैनी की हालत में नशा करने लगती है। कभी कभी उसके मन में दुःख के विचार उठने लगते और सोचती कि उसकी जिन्दगी पूर्ण रुप से बर्बाद हो चुकी है। कभी सोचती कि अगर महेन्द्र उसकी दुकान पर होता तो शायद ऐसा ना होता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एक दिन महेन्द्र की मुलाकात हरि से होती है। हरि अंजलि के पड़ोस में रहता था। वह अंजलि का छोटा-मोटा काम कर दिया करता था। हरि महेन्द्र को अंजलि के बारे में बताता है। महेन्द्र सोचता है कि पति के आचरण से निराश होकर शायद ऐसा हुआ होगा। वह हरि से उसके लिए दुःख प्रकट करता है और कहने लगता है "बड़े दुःख की बात है, ईश्वर उसे सद्विचारों के मार्ग पर ले जाए।' हरि घर लौटकर अंजलि के पास आता है। हरि अंजलि को महेन्द्र के साथ हुई मुलाकात तथा महेन्द्र द्वारा उसके लिए ईश्वर से की गई प्रार्थनना की बात बताता है। उस समय अंजलि नशे की हालत में थी। सुबह जब नशा उतरा उसे महेन्द्र की बातें याद आने लगीं जीवन में एक नया मोड़ आया।

अंजलि के विचारों में परिवर्तन आ चुका था। उसका अपने बदलते चेहरे, और बिगड़ी सेहत की ओर ध्यान जाने लगा। सेहत अच्छी होने के बाद उसने किराये पर उठा रखी दुकान को खुद सम्भालना चाहा और कुछ ही दिनों में कॉस्मेटिक्स की एक दुकान खोल ली।

एक दिन थाबल्लै बाजार से कुछ सामान लेने आती है। तब अंजली को दुकान पर बैठे देखकर उसके पास आती है। उनकी मुलाकात तब हुई थी जब थाबल्लै निमाई की पत्नी बनकर बलदेव के साथ दुकान पर आयी थी। दोनों एक दूसरे का हाल चाल पूछते हैं। बातों-बातों में अंजलि थाबल्लै से प्रिया को अपनी दुकान पर काम करने का प्रस्ताव देती है। थाबल्लै राजी होती हैं और एक दिन थाबल्लै प्रिया को अंजली के पास ले आती है। प्रिया उसी दिन से अंजलि की दुकान पर काम करने लगी। उसके भोले-व सीधे-सीधे स्वाभाव को देखकर अंजलि उससे प्यार करती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
है। दुकान पर जब ग्राहकों की भीड़ होती तो समान बेचते आर जब फुर्सत होती दोनों बातें करके दिन गुजारते। प्रिया सुबह आती और शाम को लौट जाती। इस तरह कुछ दिन बीत गये। उस दिन ग्राहक कम थे जिस दिन अंजलि प्रिया को आप बीती सुना रही थी। महेन्द्र का जिक्र जब आता है तो प्रिया अपनी राय देती है कि महेन्द्र एक सीधा सादा व्यक्ति है। लेकिन अंजलि उसके कुँवारेपन, निस्वार्थ और अन्य लोगों से अलग थलग स्वाभाव को देखकर विचित्र आदमी बतलाती थी। एक दिन वह प्रिया से अपने ही घर रहने को कहती है। प्रिया माँ से पूछ कर जवाब देने को कहकर चली जाती है। माँ राजी हो जाती है।

कभी-कभी अंजली प्रिया से महेन्द्र के बारे में बातचीन करती है। प्रिया भी मन की बातें प्रकट किये बगैर सुनती है। एक दिन अपने साथ महेन्द्र के घर जाने को कहती है, लेकिन प्रिया शरमा जाती है। अंजलि अकेली महेन्द्र के घर चली जाती है। महेन्द्र को नयी दुकान के बारे में बताती है। यह भी कहती है कि उसके चन्द शब्द उसके जीवन में संजीवनी की तरह नयी जिन्दगी लेकर आए हैं। उसे बर्बादी से बचाया है। कभी कभार दुकान पर आने को कहकर अंजलि वापस चली जाती है।

महेन्द्र अंजलि की दुकान पर जाता ही नहीं। एक दिन अचानक महेन्द्र को अंजलि से एक पत्र मिलता है। जिसमें उसके साथ प्रिया की शादी का प्रस्ताव था। वह यह भी लिखती है कि प्रिया मन ही मन उसकी पूजा करती है। पत्र पढ़कर वह असमंजस में पड़ जाता है। प्रिया के मन की बात उसे पता ही नहीं थी। वह प्रिया के बारे में सोचने लगता है। मन में उनके प्रति प्यार उमड़ पड़ता है लेकिन वह गृहस्थ जीवन का भार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उठाना चाहता था। उसके कई कारण थे। कई दिन सोचने के बाद एक दिन वह अंजलि की दुकान पर आता है। उस दिन प्रिया अपने घर गई हुई थी। महेन्द्र प्रिया की शादी किसी और से करा देने को कहता है क्योंकि वह जिन्दगी को सुख नहीं समझता। संसार को दुःख का स्थान और शादी को अपने आपको ही नहीं कई लोगों को दुःख के सागर में डूबने का कारण समझता है। उसके विचार सुनकर अंजलि के आश्चर्य का ठिकाना नही रहता। पूछने लगती है कि वह अपनी जिन्दगी क्या करके गुजारेगा? जवाब में महेन्द्र कहता है कि उसका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। काम करे चाहे न करे भारत के ऋषि मुनि भी तो बिना काम किये रहते थे। लोग उनके द्वारा दिये धर्म तथा ज्ञान के उपदेश को आज तक अमूल्य मानते हैं। हम उनकी तरह तो नहीं हो सकते मगर उनके उपदेशो का अनुकरण तो कर सकते हैं। उसकी बातें सुनकर अंजलि मुग्ध हो जाती है।

उस दिन अंजलि दुकान पर अकेली थी। उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। उसे चक्कर आने लगता है। आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है। बाजू की दुकान पर बैठी औरत को बुलाती है लेकिन तभी वह बेहोश हो जाती है। जब उसे होश आता है तो अपने आपको हॉस्पिटल में पाती है। कुछ दिन के लिए दुकान बन्द रखी। वह जानती थी, उसे इलाज की सख्त जरूरत है। वह बाहर के डाक्टर को दिखाना चाहती थी। सोच समझकर बुआ से कहती है कि वह महेन्द्र के साथ बाहर इलाज के लिए जाना चाहती है। कुछ दिन बाद वे दिल्ली के लिए रवाना हो जाते हैं। कोई उन पर लांछन न लगाये इसलिए बुआ भी साथ हो लेती है।

इधर प्रिया की नानी मर जाती है। श्राद्ध कर्म के बाद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रिया एक दिन अंजलि की दुकान पर आती है। वहाँ उसे बाजू की दुकान पर बैठी औरत से पता चलता है कि अंजलि महेन्द्र को साथ लिए इलाज कराने दिल्ली गई हुई हैं। जिसे सुनकर प्रिया उदास हो जाती है और उसके मन में शक पनपने लगता है। दो महीने बाद वे लोग वापस आ गये। इलाज कराने के बाद अंजलि का स्वास्थ्य ठीक रहने लगा। कुछ दिन आराम करने के बाद फिर दुकान खुलने लगी। अंजलि ने हरि को भेजकर प्रिया को बुलवाया, लेकिन वह नहीं आई।

दिल्ली से लौटने के बाद महेन्द्र अंजलि के पास कभी नहीं गया। महेन्द्र ने उसकी बहुत ही सहायता की थी। उसके व्यवहार से अंजलि ही नहीं उसकी बुआ भी मुग्ध थी अंजलि और महेन्द्र अक्सर जिन्दगी के बारे में बातें किया करते थे। दोनों में वाद-विवाद भी चलता था। सुख के बारे में महेन्द्र कहता था कि संसार में ऐसा कौन सा व्यक्ति है जिसने इच्छित सुख को पूर्ण रुप से प्राप्त किया हो। उसी की खोज में सभी पूर्ण रुप से प्राप्त किये बिना चल बसते हैं। इस पर अंजलि भी अपना मत जाहिर करते हुए 'पूछती – तो क्या जिन्दगी में सुख की प्राप्ति के लिए जो प्रयत्न कर रहे हैं उसका कोई मतलब नहीं?' महेन्द्र का जवाब था 'क्यों नहीं। अपूर्ण हो तब भी उसके लिए प्रयत्न तो जारी रखना चाहिए। जिन्दगी में लोग सुख की आशा में जीते हैं। नहीं तो कैसे जियेंगे। पर प्रयत्न के रास्ते अलग हैं। यदि सोचा जाय तो संसार में कोई लाभदायक चीज नहीं है और यदि है तो उसका अर्थ अलग-अलग रुप में है। हर किसी को अपनी नजर में लाभ है और फिर किसी एक व्यक्ति द्वारा दिए लाभ कई युगों तक अमर रह जाते हैं। वह कितने विचारणीय हैं। लाभ देनेवाले व्यक्ति संसार में अवतार हैं। इनके अलावा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ऐसे गुणवान व्यक्ति भी समाज में हैं जिन्होंने मनुष्य जाति को जाग्रत किया है। उन लोगों से थोड़ा-बहुत ज्ञान का स्वाद चख लेना भी-तो लाभ है। इस प्रकार की बातों को सुनकर अंजलि और भी असमंजस में पड़ जाती थी। आज भी वह उन बातों को याद करके विचार मग्न हो जाती है। अंजलि हर हालत में महेन्द्र की सहायता करना चाहती थी।

इधर थाबल्लै प्रिया की शादी अपनी एक सहेली के लड़के के साथ कराने का निश्चय कर लेती है। अंजलि को इसका निमंत्रण भी भेज देती है। कुछ दिन बाद हरि प्रिया के घर अंजलि द्वारा दिया सामान लेकर आता है और बताता है कि अंजलि की तबियत ठीक नहीं है वह शादी पर नहीं आ पायेगी, इसलिए सामान भिजवाया है। साथ में पत्र भी था जिससे प्रिया के मन में महेन्द्र तथा अंजलि के बारे में जो शक था, दूर हो जाता है। प्रिया पश्चाताप के आँसू बहाने लगती है और अगले दिन वह अंजलि के घर पहुँचती है। शर्म हया छोड़कर वह अंजलि से एक बार महेन्द्र से मिलवाने के लिए कहती है। अंजलि महेन्द्र के घर जाती है। सारा हाल उसे बताती है। लेकिन महेन्द्र मना कर देता है।

अंजलि एक ऐसे अच्छे स्कूल की स्थापना करना चाहती थी जिसमें अच्छे आचरण, आदर्श की शिक्षा दी जाए। वह इस स्कूल की देखभाल की जिम्मेदारी महेन्द्र को सौंपना चाहती थी। महेन्द्र राजी हो जाता है। स्कूल से संबंधित बातें समाप्त हो जाने के बाद अंजलि महेन्द्र से फिर शादी की बात छेड़ती है और पूछती है कि उसने प्रिया को स्वीकार क्यों नहीं किया। महेन्द्र को अंजलि की बातों से पता चलता है कि प्रिया की शादी नहीं हुई। वह स्कूल में हेडमास्टर का काम करने लगता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एक दिन वह प्रिया के पास दुकान पर आता है और शादी के बारे में बातचीत करता है। लेकिन प्रिया ने उससे नाराजगी जाहिर की।

कुछ दिन बाद एक दिन अचानक अंजलि से एक पत्र मिलता है। उसे पता चलता है कि प्रिया उससे सच्चे मन से प्रेम करती है। अंजलि के बुलाने पर वह उसकी दुकान पर चला जाता है। वहाँ जाकर उसे मालूम होता है कि प्रिया की माँ उसे घर ले जाने आ रही है। उसी दिन दोनों भाग जाते हैं। फिर दोनों की शादी हो जाती है। शादी के बाद प्रिया अंजलि को दुकान पर काम करना छोड़ देती है और अपने पति को भी स्कूल से काम छुड़ाना चाहती है। वैसे वह अंजलि की कद्र करती थी उसके प्रति उसके मन में श्रद्धा थी लेकिन फिर भी नारी स्वभाव से वह अछूती भी तो नहीं थी। महेन्द्र उसकी बातों को हँसकर टाल देता है। इस बीच एक बड़े इण्डस्ट्रियल सैण्टर का एक असिस्टेन्ट मैनेजर के पद का विज्ञापन निकलता है। इन्टरव्यू में महेन्द्र को चुन लिया जाता है। वह अंजलि के पास जाता है और इस्तीफा दे देता है। नयी नौकरी पर लग जाने के बाद एक दिन महेन्द्र की मुलाकात उस अध्यापक से होती है जो पहले उसके साथ अंजलि के स्कूल में काम करता था। वह बताता है कि अंजलि अब दुकान छोड़ चुकी है और अपनी सारी सम्पति उस स्कूल की उन्नति में लगाने की सोच रही है। अंजलि के उदार दिल को देखकर महेन्द्र मन में बार-बार उसकी प्रसंशा करने लगता है।

प्रस्तुति : डॉ० ल० इबेम्हल देवी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पत्रिका सम्बन्धी घोषणा

(फार्म, ४, नियम ८ के अन्तर्गत)

१।	पत्रिका का नाम	महिप पत्रिका
२।	प्रकाशन-स्थान	इम्फाल
३।	प्रकाशन अवधि	त्रै-मासिक
४।	मुद्रक का नाम व पता	मॉडर्न प्रेस गांधी एवेन्यु, इम्फाल-७९५००१
	नागरिकता	भारतीय
५।	प्रकाशक का नाम व पता	प्रधान सचिव मणिपुर हिन्दी परिषद एलेम्बली रोड, इम्फाल ७९५००१
	नागरिकता	भारतीय
६।	सम्पादक का नाम व पता	देवराज मणिपुर हिन्दी परिषद एसेम्बली रोड, इम्फाल-७९५००१।
	नागरिकता	भारतीय
७।	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हों या जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों	प्रधान सचिव मणिपुर हिन्दी परिषद एसेम्बली रोड, इम्फाल-७९५००१

घोषणा : मैं, प्रधान सचिव मणिपुर हिन्दी परिषद, एसेम्बली रोड, इम्फाल एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी व विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)
डॉ० सापम तोम्बा सिंह
प्रधान सचिव
एवं
प्रकाशक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant